समय के साथ बदलती नारी

निशा किचलू
रा.ज.सं.,रूड़की

"खुल चुकी है एक मुट्ठी, जो सदियों से बंद थी। इसमें कई सुरीले सपने हैं, धीमी–धीमी बजती प्यारी–सी एक मीठी धुन है, जिस पर जिंदगी गुनगुना और थिरक रही है। सतरंगी किरणें हैं उम्मीदों की, हौसला है जमाने को बदलने का, और इरादा है, हर खालीपन को खुशियों से भरने का.....एक लंबी उड़ान है, जो ले जाएगी दुनिया को आसमान के उस पार, जहां लोग सच में एक–दूसरे से करते हैं प्यार। औरतों की खुली मुट्ठियां जब थाम लेती है, एक–दूसरे का हाथ और ठान लेती है कुछ कर गुजरने को तो यकीन मानिए, कुछ भी नामुमकिन नहीं रह जाता इस दुनिया में।"

"स्त्री स्वयं कला है।" बहुत पहले कहीं पढ़ा था कि स्त्री स्वयं कला है वह अपने आकार–प्रकार–व्यवहार में नृत्य सी है। जीवंत, लयात्मक, कलात्मक। सोचिए–शुष्क व्यवहार और उपेक्षा की मार झेलते हुए भी स्त्री ने अपने सौन्दर्य और सहजता को किस खूबसूरती के साथ बचाए और बनाए रखा है। ऐसी ही है प्रकृति। कुछ न मांगकर, कुछ न चाहकर, महज देने वाली। खुशी, सेवा, साथ और भरोसा। स्त्री है तो दुनिया में श्रृंगार बचा है, प्रेम का भाव बचा है, घृणा सिर नहीं उठा पाती।

एक संप्रदाय है, सखी। उसके बारे में पढ़ते हुए मेरे मन में यह प्रश्न कई बार उभरा कि इसे सखा क्यों नहीं कहा गया ? जवाब मिला – इस संप्रदाय के कृष्ण–भक्त अपने प्रभु को सखी रूप में देखते हैं। वे जानते हैं कि मित्रता भी स्त्री–रूप में आकर बेहद निश्छल और सहज हो जाती है। संतुलन, सहनशीलता और सृजन का पर्याय है स्त्री। एक बार स्त्री के रूप में खुद को देखिए। संपूर्ण स्त्रीत्व का स्वयं में बोध कीजिए। आप समझेंगे कि महज समर्पण की भावना के साथ जिंदगी जीना कितना कठिन और साथ ही किस कदर महत्वपूर्ण है, यदि हम स्त्री–रूप का सम्मान नहीं करते तो यह प्रकृति का ही अपमान है। फिर भी अफसोस....भ्रूण हत्याएं बढ़ती जा रही हैं। सवाल बस इतना है कि हम कैसा जीवन चाहते हैं ? कैसी कुदरत चाहते हैं, जो स्त्री के बिना सोची जा रही हैं, मांगी जा रही है, हमारे द्वारा इच्छित है ? मातृशक्ति–स्त्री शक्ति को हर रूप में समानता देनी होगी।

समय की रेखा पर बदलती औरतें

विविध महिला आलेखन एवं केन्द्रों के अनुसार

समाज में औरतों की स्थिति हमेशा एक सी नहीं रही है। जिन रास्तों से होकर समाज की राजनीति और अर्थनीति बदली, उन्हीं रास्तों से होकर समाज में औरतों की स्थिति बदली है।

ऋग्वैदिक काल

इस काल में स्त्रियों को जीवन के सभी क्षेत्रों में बराबर का दर्जा प्राप्त था। बाद में इस काल के अंत में त्रेता, द्वापर युग के बाद युद्धों में नारी की छीना–झपटी होने लगी।

मध्यकाल

इस काल में विदेशियों के आक्रमण के साथ नगरों का ध्वंस तो हुआ, साथ ही नारी के मान का ध्वंस भी। यही वह समय था, जब भारत में सती प्रथा और बाल–विवाह जैसी कुरीतियां

शुरू हुई। इन परिस्थितियों और बंदिशों के बावजूद कुछ महिलाओं जैसे 'रजिया सुल्तान' गोंड की महारानी दुर्गावती, चांद बीवी, शिवाजी की माँ जीजाबाई व दक्षिण भारत में कई महिलाओं ने भी राजनीति, साहित्य, शिक्षा और धर्म के क्षेत्र में सफलता हासिल की। भक्ति आंदोलन ने भी महिलाओं की बेहतर स्थिति को वापस लाने की कोशिश की।

उन्नीसवीं शताब्दी

यह वह दौर था, जब तमाम सुधार आंदोलन के द्वारा सर्व श्री रामोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले पंडिता रमाबाई आदि कई सुधारकों ने महिलाओं के उत्थान के लिए लड़ाइयां लड़ी।

20वीं शताब्दी का आरंभ व 1920 के आस–पास का समय

आमतौर पर देश मध्यकालीन प्रभावों में ही जी रहा था। हां यूरोप से महिला स्वतंत्रता आंदोलन की चिनगारी देश में पहुँचने लगी थी। चेतना की शुरूआत तो हो ही चुकी थी, लड़कियों के लिए कुछ स्कूल खोले जाने लगे।

40 का दशक

स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या विरोध के बावजूद बढ़ रही थी। एक पुरूष वर्ग भी चाहने लगा उनके घरों की लड़कियां भी पढ़े–लिखें।

आजादी के बाद 60, 80, व 90 का दशक

लड़कियों की पढ़ाई ने समाज में जागरूकता पैदा करनी शुरू कर दी। महिलाएं नौकरी में कदम बढ़ा रही थी। महिला अधिकारों व संगठनों की बातें सुनी जाने लगी। लेकिन महिलाओं की सीमाएं तय थी। परिवार का मुखिया अब भी पुरूष था। 90 के दशक में ग्लोब्लाइजेशन का दौर दस्तक दे रहा था। महिलाओं में नया आत्म विश्वास आ रहा था। नई क्रांति हो चुकी थी।

21वीं सदी की शुरूआत

अलग तरह के पुरूष व स्त्री का उदय हुआ। बराबरी से व्यवहार करने वाले जोड़े बनने लगे। नौकरी पेशा बीबी के साथ रिश्ते बदलने लगे। महिलाओं के हक में आयोग व अधिकार बनने लगे। जैसे – हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम 1956, दहेज विरोध अधिनियम, विशेष विवाह अधिनियम 1954, समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976, वेश्यावृत्ति निवारण अधिनियम 1986, बाल विवाह, निषेध व सती प्रथा निषेध आयोग अधिनियम 1987, घरेलू हिंसा में महिलाओं की सुरक्षा हेतु अधिनियम 2005 आदि कई राज्यों में राज्य महिला आयोग बने हैं। राष्ट्रीय महिला आयोग, नई दिल्ली में है। राज्य महिला आयोग दिल्ली, लखनऊ, गोवा, जयपुर, भोपाल, देहरादून, बिहार, शिमला, मुंबई, गांधी नगर, श्रीनगर, चंड़ीगढ व कोलकाता में बने हैं।

भारत सरकार की ओर से महिलाओं के लिए कई विकास कार्यक्रम व कल्याणकारी योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। अलग–अलग राज्यों में इन योजनाओं को अलग–अलग नामों से जाना जा रहा है। जैसे – जननी सुरक्षा योजना, सतत शिक्षा कार्यक्रम, महिला खेल–कूद योजना, बालिका गृह, गृह उद्योग योजना, स्पेशल प्रोग्राम फॉर वुमन डेवलपमेंट, किषोरी शक्ति योजना, ग्रामीण महिला विकास योजना व स्त्री शक्ति पुरस्कार योजना आदि। ''स्त्री–शिक्षा के अहम

केन्द्र'' खुल गये हैं। जैसे – वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वुमन नई दिल्ली, मिरांडा हाउस नई दिल्ली, सोफिया कॉलेज मुंबई आदि।

इंटरनेट पर स्त्री अधिकारों व स्त्री स्वास्थ्य आदि से संबंधित कई वेब–साइट्स हैं। जिनका वह सुविधानुसार इस्तेमाल कर सकती हैं। जैसे – राष्ट्रीय महिला आयोग, जागोरी, मातृका, निरंतर, संगिनी, इंडियन वुमेन्स हेल्थ, मेडिलाइन प्लस, हेल्थी वुमन, वुमन हेल्थ आदि। फेसबुक और ऑरकुट सरीखी सोशल कम्युनिटीज पर मिली अभिव्यक्ति की आजादी को महिलाएं सेलिब्रेट कर रही हैं। वे रोटी सेकते, सब्जी पकाते और दाल छौंकते हुए कविताएं लिख रही हैं, गीत साझा कर रही है। दफ्तर के लिए तैयार होती, रिहर्सल की खातिर दौड़ती, बच्चों को दूध–नाश्ता देती, फेसबुक पर स्टेटस अपडेट कर रही हैं। वे व्यक्तिगत संतोष के लिए लिख रही हैं और अपने विचार साझा कर रही हैं।

बदलती दुनिया के साथ कदम ताल करती औरतों का दायरा आज घर तक ही सीमित नहीं है। उनके लिए घर–परिवार के साथ अब करिअर भी महत्वपूर्ण हो गया है। आज उनके लिए करिअर के रूप में कई नए विकल्प मौजूद हैं। जैसे – लेखन, काउंसलिंग, इंटीरियर डिजायन, अध्यापन व प्रशिक्षण, वकालत, मानव संसाधन प्रबंधन, कंप्यूटर व सूचना तकनीक विश्लेषण, कस्टमर केअर, ललित कला, संगीत स्वास्थ्य सेवा, मीडिया व सिनेमा के क्षेत्र में भी महिलायें आगे बढ़ रही हैं। पारूल घोष हिंदी सिनेमा की पहली पार्श्व गायिका थी, जिन्होंने 1935 में फिल्म 'धूप–छांव' के लिए आवाज दी। संगीत निर्देशक 'सरस्वती देवी' ने 1936 में फिल्म 'अछूत कन्या' के लिए संगीत दिया भारत की पहली महिला फिल्म निर्देशक 'फातिमा बेगम' ने 1926 में बुलबुल–ए–परिस्तान नाम की फिल्म बनाई थी। मेघना अश्चित, स्नेहा खानवलकर, जिस्सी माइकल, नेहा पार्ती आदि महिलाओं ने नये सिनेमा का उदय किया।

ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं ने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खास पहचान बनाई है। राजस्थान की कृषक महिलाओं का नाम विशेष रूप से उभरकर आता है। ग्रामीण महिलाएं चुनाव जीत कर पंचायत की सरपंच के रूप में ''राष्ट्रीय गौरव ग्राम सभा'' पुरस्कार जीतकर गौरवान्वित हो रही हैं। सीमा, शमा, शहनाज और शारदा – इन पांचवी पास ग्रामीण महिलाओं ने सोलर कुकर बनाकर सबको हैरान कर दिया। सभी 'समाज कार्य एवं अनुसंधान केन्द्र, तिलोनिया' में काम करती है। इसी केंद्र के एक कंप्यूटर विभाग से प्रशिक्षण प्राप्त एक ग्रामीण महिला 'नौरजी बाई' ने 24 मई, 2003 को बेंगलुरू में 'प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया' व अन्य संगठनों की ओर से आयोजित कार्यशाला 'मीडिया और उसका विकास' में कंप्यूटर से जुड़ी बड़ी स्क्रीन पर बेझिझक गांव के निर्माण कार्य और जलमार्गों को दर्षाया। कार्यशाला में भारत के कंप्यूटर जगत के जाने–माने लोग मौजूद थे, जो नौरजी बाई की उपलब्धि देखकर दंग रह गए।

विभिन्न महिला आलेखन केन्द्रों के आंकड़ों के अनुसार

- ✓ ''ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं पुरूषों की तुलना में दो गुना अधिक श्रम करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं 90.2 प्रतिशत कृषि क्षेत्र में कार्यरत हैं। 75 से 85 फीसदी कृषि संबंधी कार्यों को वे ही अंजाम देती हैं।''
- ✓ भारत में व्यवासायिक शिक्षा हासिल करने वाली महिलाएं दुनिया के किसी भी मुल्क से ज्यादा हैं।
- ✓ नौकरी करने वाली महिलाएं यानी वर्किंग वुमन भारत में सबसे अधिक हैं।
- ✓ भारत में अमेरिका से ज्यादा महिलाएं डॉक्टर, सर्जन, वैज्ञानिक और प्रोफेसर हैं।

मैडम एलिजाबेथ ब्लेकवेल के शब्दों में –

''जो समाज स्त्रियों के विकास को उचित नहीं ठहराता, उस समाज को बदल देना बेहतर है।''